E-ISSN: 2709-9369
P-ISSN: 2709-9350
www.multisubjectjournal.com
IJMT 2025; 7(9): 121-129
Received: 05-08-2025
Accepted: 06-09-2025

डा. विजयेन्द्र झा

अध्यक्ष, मैथिली विभाग ललित
नारायण तिरहुत महाविद्यालय,
मुजफ्फरपुर, बिहार, भारत

मैथिली भाषाक उद्भव ओ विकास: एक विश्लेषण

विजयेन्द्र झा

DOI: <https://www.doi.org/10.22271/multi.2025.v7.i9b.792>

सारांश

मैथिली मिथिला क्षेत्रक प्राचीनतम भाषा थिक, मुदा उपलब्ध साक्ष्यक आधारपर एहि भाषाक उद्गम-स्थल वेदसँ भेटैत अछि। पश्चात् संस्कृत, प्राकृत, पालि, अवहट्ट (अपभ्रंश) आदिक सीमाकेँ पार करैत आधुनिक मैथिलीक स्वरूप ग्रहण कएलक अछि। मैथिली भाषा जे वेदमे अपन विशेष स्वनिमक संग अंकुरित भेल, ओ पश्चात् संस्कृत, प्राकृत आ' अवहट्टक ग्रन्थसभमे क्रमशः अपन ध्वनि-परिवर्तन आ' स्वनिमप्रक्रियामे परिवर्तन क' अन्ततः आधुनिक स्वरूप प्राप्त क' सकल। एकर पुखता प्रमाण ई अछि जे मैथिली भाषाक अनेक शब्द, जेना वाचस्पति मिश्रक 'भामति' सँ ल' सर्वानन्दकृ 'आमरकोश'क टीका; सिद्धाचार्यलोकनिक 'चर्यापद' आ' दोहाकोश; 'डाकवचन', 'प्राकृतपैंगलम्', विद्यापतिक अवहट्ट रचना कीर्तिलता, कीर्तिगाथा, कीर्तिपताका आदि ग्रन्थसभमे अनेक मैथिलीक शब्दसभ अपन स्वनिमक संग प्रयुक्त होइत गेल आ' नबीन मैथिलीक निर्माण कएलक। यथार्थमे मैथिली भाषाक सांकेतिक उद्भव वेदे सँ प्रारंभ होइत अछि आ' क्रमशः एकर विकासक्रम अनेक भाषा होइत आइ वर्तमान मैथिलीक रूपमे समक्ष अछि।

कुटुम्बशब्द: अवहट्ट, अक्षरजीवी, आर्यगण, आर्यभाषा, उद्भव, प्राकृत, ध्वनि-परिवर्तन, स्वनिमप्रक्रिया-परिवर्तन, वैदिककाल, सामाजिक, सांस्कृतिक, संस्कृत

प्रस्तावना

पूर्वपीठिका

मिथिला बिहार राज्यक एकटा एहन भू-खण्ड अछि जे गंगासँ उत्तर, भोजपुरसँ पूब बंगालसँ पश्चिम आ' हिमालयसँ दक्षिण अवस्थित अछि। ई क्षेत्र 25-27" डिग्री अक्षांश आ' 84-87" डिग्री पूर्व देशान्तरक मध्य पडैत अछि। एकर ऊँचाइ मध्य समुद्र तटसँ करीब 52 मीटर अछि। बिहार सरकारक सांख्यिकी विभागक अभिलेखानुसार एतए साल भरिमे औसतन 127 सेमी. वर्षा होइत अछि आ' कर्क संक्रान्तिक आसपास अधिकतम 42 सेन्टीग्रेड तापमान रहैत अछि।¹

एहि ठामक निवासीक मानवजातीय (Anthropological) अध्ययन ठीकसँ नहि भ' सकल अछि। एहि क्षेत्रक लोक मिश्रण वा वर्णसंकरकेँ गर्हित मानैत छथि। प्रत्येक मिथिलावासी अपनाकेँ विशुद्ध आर्यरक्त बुझैत छथि, मुदा पातंजलिक महाभाष्य, महाभारत आदि प्राचीन हिन्दू ग्रन्थसभमे आर्यक जे रूप-रंग वर्णित अछि. ताहि तरहक लोक एतए संयोगे सँ भेटत।

Corresponding Author:

डा. विजयेन्द्र झा

अध्यक्ष, मैथिली विभाग ललित
नारायण तिरहुत महाविद्यालय,
मुजफ्फरपुर, बिहार, भारत

प्राचीन ग्रन्थसँ स्पष्ट होइछ जे मिथिलाक उत्तरमे 'किरात' आ' दक्षिणमे 'कोल'क निवास छल।² पश्चिमसँ आर्यलोकनिक आगमण भेल। निश्चित रूपेँ एहि त्रिवेणीमे आर्य धारा गंगाक भाँति प्रबलतम तथा अन्य धारा यमुना एवं सरस्वतीक भाँति मूल धारामे सामिल होइत गेल। मुदा, इतिहास वा मानव विज्ञानक जाहि दृष्टिएँ अध्ययन करू आइ मिथिलाक निवासी की हिन्दू, की मुसलमान सभ एक छथि। यद्यपि ई लोकनि वर्ण आ' जातिमे विभक्त रहलाह। आ' एहिमे अन्तरजातीय विवाह सेहो वर्जित रहल तथापि परस्पर सामाजिक, सांस्कृतिक एकात्मकता सदैव सुदृढ रहल अछि। स्वभावतः मिथिला, मैथिली भाषी क्षेत्र अछि तँ एहिठामक समस्त निवासी चाहे ओ कोनहुँ वर्ग, धर्म, वा सम्प्रदायक होथि, अपन मातृभाषा मैथिली बजैत छथि। एहिठाम परदेशीलोकनि सेहो वाणिज्य-व्यवसायक क्रममे एक दू पीढी बितैत-बितैत मैथिल आ' मैथिलीभाषी भ' गलाह।

मैथिली भाषा ओ साहित्य मिथिलामे रहएबला विभिन्न जातिक सम्पदा थिक। ओना, अक्षरजीवी होएबाक कारणेँ किछु वर्णक योगदान लिखित साहित्यमे किछु बेसीए रहल। ई कहबामे कोनो संकोच नहि जे मैथिली साहित्यमे पुरातन कालहिसँ ब्रह्मणेतर वर्गक पर्याप्त योगदान रहल अछि। जेना सिद्धक दोहा, डाक-घाघक वचन, मैथिली लोकगीत आ' लोरिक, सलहेस, विहुला आदिक लोकगाथा ।

मिथिलाक सामाजिक एवं सांस्कृतिक जीवन प्रारम्भहिसँ उल्लासमय रहल, चाहे धार्मिक हो अथवा सामाजिक। प्रत्येक अवसरपर एतए कण्ठ मुखरित भ' उठैत अछि। जनजीवनक उल्लासमयताक मूल कारण एहि क्षेत्रक भौगोलिक स्थिति रहल अछि। सुदूर अतीतसँ ल' 19म शताब्दीक आसपास धरि मिथिलाक लोकक जीवन-यापन सरल रहल अछि। पेट भरबाक लेल एतए

कहिओ लोककेँ परिश्रमक प्रयोजन नहि पडल। नदी मातृक क्षेत्र होएबाक कारणेँ नाना प्रकारक शस्य आ' पुष्पसँ लोक तृप्त होइत रहल। राष्ट्र विप्लवक चोट सेहो एहि क्षेत्रकेँ कहिओ नहि सहय पडल। देशक पैघ-पैघ राजनीतिक उथल-पुथलक प्रभाव सेहो नहिँ जकाँ भेल। इएह कारण अछि जे प्राचीन मैथिली साहित्यमे सर्वत्र माधुर्य विद्यमान अछि।³ ओजक अभावे जकाँ अछि। एहिठामक लोक प्रायः संतोषी होइत छलाह। बाडीक सागसँ तृप्त होएबाक आदर्श छल एतए; मुदा हाथ पसारब उचित नहि बुझल जाइत छल। कहबाक तात्पर्य ई जे भौतिकताक भूत एहि जनपदकेँ नहि पछाइलक। सादा जीवन ओ उच्च विचार एहिठामक जीवन-दर्शनक मूल मंत्र रहल। शिव एवं शक्तिपर अटूट आस्था एहिठामक लोकमानसक मूल मंत्र रहल। मिथिलावासीक उल्लासमय जीवनक रहस्य इएह आशावादी दार्शनिकता थिक। उपर्युक्त विशेषताक संदर्भमे मैथिली साहित्यक मूल्यांकन उचित होयत।

भारत अनेक भाषाक एकटा सुरम्य उद्यान थिक। एहिठाम एतेक ने भाषा आ' तकर ततेक ने प्रकार अछि जे विगत शताब्दीक उत्तरार्द्धमे विश्वक भाषाशास्त्रीलोकनिक ध्यान एहिठामक भाषा सर्वेक्षण दिसि आकृष्ट भेल। सर जार्ज अब्राहम ग्रिअर्सनक निर्देशमे ई कार्य सम्पन्न भेल। हुनका मोताबिक भारतमे 179 भाषा आ' 544 उपभाषा बाजल जाइत अछि।⁴ ई भाषा चारि भिन्न-भिन्न कुलक थिक-भारोपीय, द्रविड, आस्ट्रो-एशियाटिक, चीनी-तिब्बतीय। मानव जातिविज्ञानक मोतिबिक निग्रो कल्प वा निग्रोटो प्रजातिक लोक एतए बसैत छल, जनिकर वंशज आब प्रायः नहि रहलाह, मुदा अण्डमान आदि द्विपमे एखनहुँ पाओल जाइत अछि। निग्रोटोक पश्चात् आद्य आस्ट्रेलियाइ कल्प प्रजातिक लोक एतए अएलाह जे आस्ट्रिक कुलक भाषा बजैत छल।⁵ किछु विद्वान् लोकनिक अनुसार हिन्दू वर्ण व्यवस्थाक चतुर्थ वर्णमे

पडएबला अधिकांश जाति एहि प्रजातिक थिक। ओकर पश्चात् द्रविडक आगमन भेल जे द्रविड कुलक भाषा बजैत छल। दक्षिण भारतक तमिल, तेलुगु, कन्नड, मलयालम आदि भाषा द्रविड कुलक थिक। द्रविडक पश्चात् आर्यलोकनिक आब्रजन भेल। ई सभ भारोपीय कुलक भाषा बजैत छलाह। एहि प्रकारेँ निम्न रूपेँ आर्यावर्तक भू-खण्डपर चारि भाषा-भाषीक आगमन भेल :-

निग्रोटो-->आद्य-आस्ट्रेलियाइ-->द्रविड-->आर्यगण

भारोपीय आ' द्रविड कुल बेसी प्रभावशाली छल। जे आन समस्त कुलक भाषाकेँ दबाए उत्तर आ' दक्षिण भारतमे पसरि गेल। सर विलियम जाँन ई आविष्कृत कएलनि जे", संस्कृत, लैटिन आ' ग्रीक एकहि मूल भाषासँ बहराएल अछि" -- जे आब विलुप्त भ' गेल अछि।⁶ तहिएसँ भाषाक तुलनात्मक अध्ययन आ' भाषाविज्ञान नामक शास्त्रक जन्म भेल। एहि शास्त्रक मोताबिक यूरोपसँ भारत धरि बहुतरास भाषा मूलतः समान पाओल गेल आ' भाषाक एहि कुलक नाम 'भारत-यूरोपीय परिवार' वा 'भारोपीय कुल' राखल गेल। एहि भाषाक आधारपर जे सभ मूल भाषा अनुमानतः परिचित कएल गेल ओकर नाम मूल आर्यभाषा (Primitive Indo-European Language) पडल। विश्वक आधासँ बेसी क्षेत्रमे एहि भारोपीय कुलक सहस्राधिक आधुनिक भाषा परस्पर सादृश्यक आधारपर 14 शाखामे बाँटल गेल, जकरा अन्तर्गत भारतीय नबीन आर्यभाषा सेहो अबैत अछि। पहिने कहलहुँ अछि जे आर्यलोकनिक निवास कतहुँ मध्य देशमे छल, जतएसँ ओ लोकनि पूब दिसि अग्रसर भेलाह। ईरान ल'ग पहुँचलापर ओसब दू दलमे बटि गेलाह। एकटा दल ईरानमे बसि गेल आ'दोसर दल अफगानिस्तान होइत भारतमे प्रवेश कएलक। इएह कारण अछि जे भारतीय शाखाकेँ ईरानी शाखासँ एतेक निकट सम्बन्ध छैक। जेना, "लैटिनमे-->

सेप्टेम, संस्कृतमे--> सप्त, ईरानीमे-->हप्त" होइत अछि।⁷

आर्यजनक भारतमे प्रवेशक समय करीब 2500 ईसा पूर्वसँ थोडे'क पहिनहिसँ आइ धरि, हुनक भाषा-अभिलेख हमरालोकनिकेँ अविच्छिन्न रूपेँ अत्यधिक मात्रामे भेटैत अछि। भाषाक प्राचीन स्वरूपक अध्ययनक हेतु एतेक सामग्री संचित रखबाक सौभाग्य विश्वक कोनो अन्य भाषाकेँ भरिसक प्राप्त नहि अछि। एतबे नहि बहुतरास अमूल्य आ' प्राचीन व्याकरण सेहो अत्यन्त वैज्ञानिक आ' सांगोपांग रूपमे उपलब्ध अछि। प्राच्य आर्यलोकनि भारतीय आर्यभाषाक विकासक्रमकेँ तीन भागमे बाँटने छथि-प्राचीन, मध्य ओ नबीन।

प्राचीन भारतीय आर्यभाषा

प्राचीन भारतीय आर्यभाषा लगभग 1500 ईस्वी पूर्वसँ आरम्भ होइत अछि। एहि अवस्थाक भाषाकेँ किछु विद्वान् लोकनि प्रथम प्राकृत मानैत छथि। कालान्तरमे प्राचीन भारतीय भाषाक दू स्वरूप भ' गेल। वेद आ' ब्राह्मण भाषाकेँ वैदिक आ' ओहि कालखण्डक लोक-व्यवहारक भाषाकेँ लौकिक कहल गेल। वर्तमानमे वैदिक भाषाकेँ काल विशेषक मुख भाषा (Spoken Language) कहल जाइछ। एहि मुख भाषाकेँ विद्वान् लोकनि ज्ञान-विज्ञानक वाहिनी बनओलनि। ग्रन्थ निबद्ध भेलापर एकर स्वरूप स्थिर भेल आ' परिस्कृत होइत गेल आ' तँ एकर नाम संस्कृत पडल। एहि प्रकारेँ संस्कृत, प्राकृत अपभ्रंश आ' पश्चात् आधुनिक भारतीय आर्यभाषा जाहिमे मैथिलीओ अछि-विकसित भेल। ओना अधिकांश भाषावैज्ञानिक एहि भाषा विकासक्रमक प्रसंग दोसर रूपेँ सेहो उल्लेख कएलनि अछि:

भारत ईरानी शाखाक किछु आर्यलोकनि भारत अएलाह आ' हुनके लोकनिक कारण भारतमे आर्यभाषा बाजल जाए लागल। आर्यलोकनि भारत

कतोक दलमे अएलाह। भाषावैज्ञानिक प्रमाणक आधारपर जार्ज अब्राहम ग्रिअर्सन आदि विद्वानक कहब छनि जे भारतमे आर्यक प्रवेश कमसँ कम दू बेर अवश्य भेल। ओना सभ विद्वान् एहि बातसँ सहमत नहि छथि। अधिकांश लोक ई मानैत छथि जे 1500 ईस्वी पूर्व भारतमे आर्यक आगमन भेल छल। अर्थात् भारतीय आर्यभाषाक इतिहास 1500 ईस्वी पूर्वसँ ल' 2025 ईस्वी धरि पसरल अछि।⁸ ओना मूल भारोपीय भाषाक काल 2500 ई. मानल गेल अछि, जहिआसँ मध्यदेशक आर्यगण पूर्व दिशामे प्रसृत भेलाह।

भारत-ईरानी शाखाक काल 2000 ई. पू. मानल गेल अछि तथा 1550 ई. पूर्वक समय आर्यगण दू दलमे बाँटि गेलाह आ' एहिमे सँ 1500 ई. पू. मे एकटा दल भारत पहुँचलाह। एहि चारि हजार वर्षक कालकेँ सेहो विविध वर्गमे बाँटल जा सकैछ:

- प्राचीन भारतीय आर्यभाषा काल-1500-500 ईस्वी पू.
- मध्यकालीन भारतीय आर्यभाषा-काल-500 ई. पू. सँ 1000 ई. धरि
- आधुनिक भारतीय आर्यभाषा-काल-1000ई. सँ अद्यावधि

प्राचीन भारतीय आर्यभाषाक प्रारंभ वैदिक भाषासँ होइत अछि जकर समय 1500 ई. पू. मानल जाइछ। पश्चात् एहीसँ लौकिक संस्कृत 1500-500 ई. पू.मे विकसित भेल। एहिना प्राकृत 500 ई. पू. 1000 ईस्वी धरि विकसित भ' टिकल रहल जे अपन तीन स्वरूपमे सोझाँ अबैत अछि-500 ई. पू.सँ पहिल ईस्वी धरि पालि, पहिल ईस्वीसँ 500 ईस्वी धरि प्राकृत तथा 500 ईस्वीसँ 1000 ईस्वी धरि अपभ्रंश आ' 1000 ईस्वीसँ अद्यावधि 'मैथिली'। भाषा विकासक एहि क्रमकेँ निम्न रूपेँ देखल जा सकैछ:

वैदिक भाषा-->लौकिक संस्कृत-->प्राकृत-->अपभ्रंश (अवहट्ट)-->प्राचीन मैथिली-मध्यकालीन मैथिली-->आधुनिक मैथिली

भाषा विकासक उपर्युक्त प्रक्रियासँ ने मात्र मैथिली अपितु समस्त आधुनिक भारतीय आर्यभाषा विकसित भेल अछि। ध्यातव्य जे प्राचीन कालक मैथिलीक कालखण्ड 1600 ईस्वीसँ पूर्वक थिक। 1600 ई.सँ 1860 ई. धरि मध्यकालीन मैथिलीक समय छल तथा 1860ई. सँ अद्यावधि आधुनिक मैथिलीक समय थिक। आधुनिक मोथिली सेहो पूर्व आधुनिक काल (1860-2000 ईस्वी) आ' उत्तर आधुनिक काल 2000 ईस्वीसँ अद्यपर्य मानल जाइछ।

मैथिली साहित्यक उद्भव युग

मैथिलीक उद्भव युग करीब 700 ई. सँ 1200 ई. धरि विद्वान् लोकनि मानैत छथि। ओना अनेक विद्वान् नबीन भारतीय आर्यभाषाक आरम्भ दसम-एगारहम शताब्दीक पश्चातसँ मानैत छथि आ' एहि चारि युगकेँ अपभ्रंशक अन्तर्गत रखैत छथि। पं. गोविन्द झा दू कारणेँ एकरा नबीन भारतीय आर्यभाषाकालमे रखैत छथि। पहिल तँ ई जे वस्तुतः नबीन भारतीय आर्यभाषाक अधिकांश उपादानक उद्भव एही कालमे भेल आ' चौदहम शताब्दी अबैत-अबैत कतेको नबीन भाषाक उद्भव सोझे कोनो ने अपभ्रंशसँ भेल मानल जाइत अछि। ओतए मैथिलीक उद्भवमे एकटा कडी आ'र अछि 'अवहट्ट; जकरा नबीन भाषामे समेटबाक हेतु 800-1200 ईस्वीक अन्तरालकेँ नबीन भारतीय आर्यभाषा कालमे राखल गेल अछि। भारतीय भाषाशास्त्रक दृष्टिएँ ई ध्यान देबाक थिक जे अवहट्ट मैथिलीमे प्रचलित एक समयक एकटा एहन भाषा अछि जकर स्वन-तंत्रतँ प्राक् विद्यापतिकालीन भाषाक अछि, मुदा रचना-तंत्र नबीन भाषाक।

एहि उद्भव युगमे सिद्धाचार्यलोकनिक दोहाकोश डाकार्णव-महायोगिनी तंत्र, चर्यापद, डाकक सूक्ति आदि अनेको कृति पाओल जाइत अछि, जकर भाषाकेँ अवहट्टक कोटिमे राखल जा सकैछ तथा ओहिमे प्राचीन मैथिलीक अधिकांश रूप-तत्व विशेष मात्रामे निखरल अछि। मैथिलीमे अवहट्ट साहित्य अत्यल्प, मात्र विद्यापतिक तीन गोट कृति - "कीर्तिलता", "कीर्तिपताका" तथा "कीर्तिगाथा" अछि, जाहिमे तथा अन्य ग्रन्थसभमे आधुनिक मैथिली शब्दसभ अभडैत अछि। एहि ग्रन्थसभमे प्रमुख अछि-वाचस्पति मिश्रक "भामती", सिद्धाचार्यलोकनिक "चर्यापद" ओ "दोहाकोश", सर्वानन्दकृत "अमरकोशक टीका" "डाकवचन", विद्यापतिकृत "कीर्तिलता", "कीर्तिगाथा" आ "कीर्तिपताका" तथा "प्राकृतपैंगलम्"।¹⁰

वाचस्पति मिश्र द्वारा नओम शताब्दीमे रचित "भामती" मे 'हडि' (काठक बेरी) शब्दक प्रयोग जे मैथिलीक देशी शब्दक प्रायः प्राचीनतम अभिलेख थिक। नओमसँ बारहम शताब्दीक सिद्धाचार्यलोकनिक "चर्यापद" आ "दोहाकोश", जे लिखल तँ मैथिलीमे अछि मुदा अवहट्टसँ पूर्णतः प्रभावित बुझाइत अछि, तँ ई स्पष्टतः नहि कहल जा सकैछ जे ई विशुद्ध मैथिलीक रचना थिक। एगारहम सदीक "डाकवचन" अपभ्रंश प्रभावित मैथिलीक पदसभ थिक। एहि पदसभक रचना ओना पूर्वक बुझाइत अछि, कारण जँ डाक वराहमिहिर (537 ई.) 'क संतान छलाह तँ हुनक समय सातम शताब्दी बैसैत अछि। एगारहम शताब्दीक सर्वानन्दक "अमरकोश"क टीकामे चारि सए सुच्या मैथिली शब्दक प्रयोग भेल अछि। विद्यापतिक अवहट्टक तीनू ग्रन्थ "कीर्तिलता" (1402-05), "कीर्तिगाथा" (1402-05) तथा "कीर्तिपताका" (1406-1414) 'क भाषा अपना समयसँ पूर्वक थिक अर्थात् विद्यापतिक समयसँ पूर्वक भाषा थिक, मुदा एकर स्वन-तंत्र आ' एहिमे

प्रयुक्त अनेक शब्द विशुद्ध प्राचीन मैथिलीक थिक, जे दशम शताब्दीक बुझाइत अछि। एकर अलावा "प्राकृतपैंगलम्", "संदेश रासक" तथा "पुरातन प्रबंध संग्रह" आदि ग्रन्थहुँमे सुच्या प्राचीन मैथिलीक शब्दसभक प्रयोग भेटैत अछि।

रूपक बहुलता एहि युगक भाषाक सर्वोत्कृष्ट वैशिष्ट्य अछि, जेना-सम्बन्ध कारकक विभक्तिकेँ लेल जा सकैछ। एकर रूप - क, केर, केरा, कर, एर, र आदि अछि। एहि रूपसभमे सँ कोनो एकटा रूप कोनो एक भौगोलिक क्षेत्रमे स्थिर भ' गेल आ' आन रूप लुप्त भ' गेल। एहि रूपक ओहि अनेक रूपी भाषासँ विभिन्न क्षेत्रमे भिन्न-भिन्न प्रकारक भाषा उद्भूत भेल, जेना-नबीन मैथिली, नबीन बंगला, नबीन असमिया आदि।

मैथिली क्षेत्रमे 'क' टिकल रहल तथा 'एर' लुप्त भ' गेल। एहिना उडियामे 'र'. एवं 'क' लुप्त भ' गेल। बंगलामे 'एर' रहल आओर 'क' लुप्त भ' गेल। एही प्रकारेँ मैथिलीमे भूतकालक क्रियापद दू रीतिँ भेटैत अछि। एकटा 'र' दोसर ल'। जेना अहाँ देखु। हमरा देखल अछि। एहिठाम ' देखु' आओर 'देखल'। एहिमे सँ मात्र 'ल' बाला समूह प्राच्य समूहमे जीवित रहल। 'उ' बाला समूह क्रमागत समाप्त भ' गेल। एहि युगक भाषाक दोसर विशेषता अछि-प्राकृतक अनेको लक्षणक अवशेष, जे प्रधानतः स्वनक विषयमे पाओल जाइत अछि, जेना - 'न' क स्थानपर 'ण' क प्रयोग; जखनकि एहि कालखण्डक सहज प्रवृत्ति 'न्' दिसि अछि। फलस्वरूप 'न्' आ' 'ण' दुनू विशेष परिणाममे भेटैत अछि; जेना - "जाम मरण भव कइसन होई।" तिण न छुपई हरिणा बिबई पानी। प्राकृतक दोहरा व्यंजन कतोक ठाम भेटैत अछि आ' कतोक ठाम सरलीकृत भ' गेल अछि। जेना - "दुज्जणा सांगे अवसरि जाइ।" विभक्ति लोपक प्रवृत्ति एहि कालमे नीक जकाँ भेटैछ से मात्र संज्ञामे नहि प्रत्युत आंशिक रूपमे क्रिया-पदमे सेहो रहैत अछि। जेना-लागए केर बदला लाग, माँगए केर

बदला माँग, आदि भाषान्तर-परिग्रह सेहो एहि युगक विशेषता थिक। एहीमे अखिल भारतीय स्तरपर प्रचलित 'शौरसेनी' वा नागर अपभ्रंशक शब्द अधिकांश मात्रामे भेटैत अछि, जेना-जसु, तसु, मझ, जेम, तेम, कोह, कोइ, सोइ इत्यादि। एकरहि सभकेँ देखि विद्विन् लोकनि ब्रजबुलिक उत्पत्ति अवहट्टे भाषासँ मानैत छथि, ने कि मैथिलीक अनूकरणपर।

आलोच्ययुगक साहित्यक झुकाब कोनो ने कोनो रूपमे क्षेत्रीय दिसि रहल अछि, तँ किछु रचनाकेँ मैथिलीक उद्भवकालीन साहित्यमे स्थान देल जा सकैत अछि, जेना-चर्यापद आ' कीर्तिलता आदि। एहि प्रकारेँ उक्ति-वृत्ति प्रकरणक झुकाब स्पष्ट रूपेँ मध्यदेशीय भाषा दिसि अछि तथा ज्ञानेश्वरीक गुजराती दिसि। एही युगक भाषान्तरोन्मुख कृतिसँ सेहो मैथिलीक विकासपर स्पष्ट रूप दृष्टिगत होइत अछि।¹¹

स्वनप्रक्रिया-परिवर्तन

कोनो भाषाक उद्भव काल अर्थात् जखन ओ भाषा कोनो प्रचलित भाषाक गर्भमे अंकुरित होइत अछि तँ ओ एकटा परजीवी जकाँ पनपैत अछि आ' क्रमशः एकसँ दू आ' दूसँ हजारक संख्यामे ओहि भाषामे नब भाषाक शब्द विकसित क' लैत अछि। आ' जखन ओकर शब्द-संख्यक बहुलता भ' जाइत अछि तँ ओहि प्राचीन भाषासँ पृथक् अपन अस्तित्व ठाढ़ क' लैत अछि आ' एखटा नबीन स्वरूपमे उत्पन्न भ' जाइत अछि। ई प्रक्रिया अत्यन्त दीर्घकालीन होइत अछि। एहि बदलावमे अनेक युग बिति जाइत अछि। जे मैथिली वैदिक कालमे वेदमे अंकुरित भेल ओकरा अपन आधुनिक स्वरूपमे पहुँचबामे हजारो वर्ष लागि गेल। एहिमे ध्वनि-परिवर्तन आ' स्वनप्रक्रिया-परिवर्तन दूटा महत्वपूर्ण कारक अछि। ध्वनि-परिवर्तनमे कोनो ध्वनिमे परिवर्तन भ' जाइत अछि, मुदा स्वनप्रक्रियात्मक परिवर्तनमे पूर्वक भाषाक स्वनिम व्यवस्था परिवर्तित होइत अछि। जेना-संस्कृतमे

'स', 'श', 'ष' तीनटा पृथक्-पृथक् स्वनिम छल। प्राकृतमे आबि एहिमे परिवर्तन भ' गेल। किछु प्राकृतमे तँ विद्यमान रहल, मुदा मागधीमे मात्र एकटा 'श' रहल, जेना 'विष'क लेल 'विश' भ' गेल। ओम्हर शौरसेनी प्राकृतमे मात्र 'स' रहल। एहि प्रकारेँ मागधी आ' शौरसेनीमे दुनूक ध्वनि व्यवस्था वा स्वनिम व्यवस्थामे परिवर्तन भ' गेल। एहिना मैथिलीमे अनेक शब्द अरबी, फारसी आ' अंग्रेजीसँ ग्रहण क' लेल गेल,¹² जेना-गरीब, फकीर, दलान, टाट, फरक, जाफरी, फटक लालटेन, मास्टर, रोड, बारामदा, इसकुल आदि। एकर परिणाम भेल जे सुरक्षित मैथिली भाषालोकनिक स्वनिम व्यवस्था बदलि गेल, कारण छओ गोठ नब स्वनिम मैथिलीमे प्रवेश क' गेल -- .क, .ख, .ग, .ज, .फ, आँ।, एकरा सभक न्यूनतम विरोधी युगम उपलब्ध अछि। जेना:

**ताक-देख--ताक-->देबालक तकखा; खाना-->भोजन;
खाना-->आलमीरा वा टेबुलक।**

ओना तँ शेष पाँच रहि गेल मुदा आगाँ इहो संभवतः नहि रहत, कारण आबक साहित्य सृजनमे ईहो पाँचो बन्दे जकाँ भ' गेल अछि। एहि प्रकारेँ मैथिलीमे दू रूपेँ स्वनप्रक्रियात्मक परिवर्तन अभडैत अछि - प्राचीन स्वनिमक लोप, जेना - मैथिलीमे 'ष'क तथा नब स्वनिमक आगम, जेना- .क, .ख, .ग, .ज, .फ, आँ। जँ गम्भीरतासँ दृष्टिपूत करब तँ किछु आओर परिवर्तन सेहो भेटत। जेना-संस्कृतक 'ट' मैथिलीमे 'ड' भ' जाइत अछि; द्रष्टव्य अछि-घोटक-->घोडा, घोटिका --> घोडी, घटिका-->घडी इत्यादि।¹³

वैदिक, संस्कृत भाषासँ 'पालि' मे स्वन-परिवर्तन

उपर देल स्वनिम-परिवर्तनक अतिरिक्त निम्न परिवर्तनपर विचार करब अपेक्षित अछि: संस्कृतमे 'ड'क मुख्य उपस्वन 'ड' छल। मैथिली, हिन्दीमे 'ड.' भ' गेल। स्वन-परिवर्तन वैदिक (संस्कृत) सँ ल' आधुनिक मैथिली धरि एक भाषा विविध

शाखा-प्रशाखामे बँटि अनेक भ' जाइत अछि।
द्रष्टव्य अछि 'धम्मपद'क निम्न पद:-

**"मनोपुब्बंगमा धम्मा मनोसेट्ठा मनोमया
मनसा चे पट्टेन भासति वा करोति वा
ततो नदुक्खमन्वेति चक्क व वहतो पदम्"¹⁴**

उपर्युक्त पद्यांशमे 14 गोट स्वनपरिवर्तन भेल अछि। विसर्गक 'ओ' आदेश-मनः> मनो; द्विरुक्ति व्यंजनसँ पूर्व स्वरक लघुत्व-पूर्व > पुब्ब; संयुक्त रेफक लोप -पूर्व> पुब्ब; विहर्गक लोप-धर्मः > धम्म; 'श'क 'स' मे परिवर्तन-श्रेष्ठाः > सेट्ठा; संयुक्त व्यंजनक सवर्णता-श्रेष्ठा> सेट्ठा; पदान्तमे व्यंजनक लोप-चेत्> चे; मूर्धन्य 'स'क दन्त्य आदेश-भाषते>भासति; विसर्गक परसवर्णता-दुःखम्> दुक्खं; आदि स्वरक लोप-इव > व इत्यादि।

मूल रूपेँ एतबहि परिवर्तनसँ वैदिक वा संस्कृत भाषा 'पालि' मे बदलि गेल। उद्धृत अंशमे व्याकरणिक परिवर्तन एक मात्र भेल अछि। जेना, आत्मनेपदक स्थानमे परस्मैपद-भाषते सँ भासति बनि गेल।

सम्राट अशोक कालीन प्राकृत

**"इयं धंमलिपि देवानं पियेना पियदसिना
लेखिता।**

**हिदा न किछि जिवे आलभितु फजोहितविये।
नो पि चा समाजे कटिविये। बहुका हि दोसा।
समाजसा देवानं पिये पियदसी लाजा दरवति।
अथि पि चा एकतिया समाज साधुमता देवानं।
पियसा पियदसिसा लाजिमे पुले महानसि।"¹⁵**

ई अंश अशोककालीन प्राकृत भाषाक निदर्श थिक, जे प्राकृतक आद्य रूप अछि। एहिमे सर्वत्र सरलीकरणक प्रवृत्ति दृष्टिगत होइछ। कतहु संयुक्त व्यंजनक प्रयोग नहि भेल अछि जेना, संस्कृतमे रहैछ। द्वितीय चरणक 'पालि' भाषामे

प्रायः सभ संयुक्त व्यंजन सवर्णीकरण द्वारा द्विरुक्ति व्यंजन भ' जाइछ। जेना-चक्रम्> कक्कं। एहि चरणमे संयुक्त स्वर 'ऐ' तथा 'ओ' सेहो लुप्त भ' गेल तथा 'र' क स्थानपर 'ल' आबि गेल जे मागधी प्राकृतक लक्षण थिक। मागधी मैथिलीक मूल थिक तथापि एहिमे 'र' क स्थानपर 'ल' नहि आयल। तृतीय चरण धरि संयुक्त व्यंजनक पूर्णतः लोप भ' गेल। कर्तामे ' ए' होयब सेहो मागधीक लक्षण थिक जे प्राचीन मैथिली आ' एकर पूर्वीय बोलीमे पाओल जाइत अछि। जेना - हमे, तोहें, मएँ। आब ई आधुनिक मैथिली आ' बंगलामे लुप्त भ' गेल मुदा असमियामे टिकल अछि।

अशोककालीन प्राकृतक पश्चात् प्राकृत अपन वास्तविक रूपमे आयल। एहिमे शब्दक मध्यमे आयल अघोष व्यंजन क्, च्, ट्, त्, प् क्रमशः घोष व्यंजन ग्, ज्, झ्, ड्, ब्'मे बदल गेल तथा कोमल होइत-होइत कतहु-कतहु लुप्तो भ' जाइत अछि। जेना, कालिदासक विक्रमोर्वशीय, अंक-4, श्लोक-70 मे देखि सकैत छी। एहिना कर्पूरमंजरीक जे प्राकृत अछि ओहिमे शब्दक मध्य आएल व्यंजन प्, य्, क्, च् त् केर लोप देखल जा सकैछ, मुदा ओहिमे कोमलीकरण मात्र दू ठाम भेटैछ जेना-पताका> पडाआ, मकरकेतुः > मअरकेदु। द्रष्टव्य अछि कर्पूरमंजरीक निम्न पद:-

**"भुअण जअ पडाआ रूप सोहा इमीए।
बसइ मअरकेदु तस्से चित्ते विचित्तो।"¹⁶
अवहइ आ' प्राचीन मैथिलीक अवतरणः**

अपभ्रंशक अन्त होइत-होइत दूटा बड व्यापक स्वन-परिवर्तन भेल। पहिल व्यंजनसँ पूर्व व्यंजनक लोप आ' ओकर पूर्व स्वरक गुरु होयब। जेना-चाक>चक्क, पाँक>पंक। एहि प्रकारक परिवर्तन प्राचीन मैथिली भाषाक अवतरणक अग्रसूचक छल। पश्चात् स्वन-परिवर्तनक दिशा सहसा बदलि गेल। एहिमे तत्समसँ तद्भव दिसि प्रवाह छल। ओना

विशेषतः उच्च स्तरपर पुनः तद्भवसँ तत्सम दिसि प्रवाह फूटि फडल। पाश्चत्त्य देशहुँमे स्वनपरिवर्तन एहिना निचाँ मुहँ होइत रहल।

निष्कर्ष

एहि प्रकारँ सम्राट अशोकक प्राकृत भाषाक शिलापट; कालिदासकृत संस्कृतमे विक्रमोर्वशीय अंक-4, श्लोक-70; राजशेखरक कर्पूरमंजरी, श्लोक-20; इत्यादि वेदसँ ल' संस्कृत, पालि, प्राकृत आदि भाषामे मैथिली शब्द लाघवक कारणँ पनपैत गेल, अपन वर्चस्व क्रमशः बढबैत गेल आ' अपभ्रंश अबैत-अबैत ओकरा बूझू गसित क' लेलक, द्रष्टव्य-ज्योतिरीश्वरक वर्णरत्नाकर, विद्यापतिक कीर्तिगाथा आदि आ' अन्ततः प्राचीन मैथिलीक स्वरूप ग्रहण करबामे समर्थ भ' सकल। पश्चात् मध्यकालीन आओर आधुनिक स्वरूपमे क्रमशः विकसित भेल। स्पष्टतः जँ वेदमे मैथिलीक किछु शब्द भेटैछ तँ ओ वेदक ऋचामे प्रयत्न लाघवक कारणँ अंकुरित भेल आ' विभिन्न भाषाक महासमुद्रक लहरिमे क्रमशः अपन उपस्थिति बढबैत गेल, शब्दविस्फोट करैत गेल आ' बूझू अपभ्रंशकें पूर्णतः गसित क' आधुनिक मैथिलीक सत्ता धरि पहुँचल। कतोक लोक अपन कुतर्क द' मैथिलीए केँ आदिभाषाक रूपमे स्थापित करबाक प्रयास करैत छथि, से पूर्णतः अप्रामाणिक, निराधार आ' तथ्यहीन अछि, कारण एक तँ वैदिक भाषासँ पहिने'क भाषाक स्वरूपक कोनो उपलब्ध साक्ष्य नहि अछि, दोसर जाहि "मानुषी" भाषाक चरचा अछि ओकर स्वरूप केहन छल सेहो उपलब्ध नहि, तखन तँ मैथिलीक उद्भवक समय बेसीसँ बेसी वैदिके कालसँ लेल जा सकैत अछि। मुदा, गौरवक विषय ई जे मैथिलीक उद्गमसँ ल' वर्तमान धरिक विहंगावलोकनसँ एतबा तँ स्पष्ट अछि जे मैथिली भाषा उपेक्षा आ' राजनैतिक षडयंत्रक पश्चातो अन्य आधुनिक भारतीय भाषासँ

कोनहुँ क्षेत्रमे पहुँचाएल नहि अछि। एहि प्रकारँ अन्य परिवर्तन प्राकृतमे देखल जाए सकैछ।

संदर्भ-सूची

1. झा, डा. विजयेन्द्र; 2023, मैथिली साहित्यक इतिहास (आदिकाल आ' मध्यकाल), मुजफ्फरपुर: प्रतिभा प्रकाशन, पृ. 91
2. ओएह, पृ. 91
3. मिश्र, डा. जयकान्त; 1988, मैथिली साहित्यक इतिहास, नई दिल्ली: साहित्य अकादेमी, पृ. 17
4. झा, डा. विजयेन्द्र; 2023, मैथिली साहित्यक इतिहास (आदिकाल आ' मध्यकाल), मुजफ्फरपुर: प्रतिभा प्रकाशन, पृ. 92
5. ओएह, पृ. 92
6. ग्रियर्सन, डा. जार्ज अब्राहम; 1881, एन इन्ट्रोडक्शन टू द' मैथिली डायलेक्ट आफ द' बिहारी लैंग्वेज एज स्पोकेन इन नार्थ बिहार, कलकत्ता: एशियाटिक सोसाइटी आफ बंगाल, पृ. 34
7. झा, डा. विजयेन्द्र; 2022, मैथिली भाषाविज्ञान, मुजफ्फरपुर: प्रतिभा प्रकाशन, पृ. 274
8. झा, विजयेन्द्र; 2023, मैथिली साहित्यक इतिहास (आदिकाल आ' मध्यकाल), मुजफ्फरपुर: प्रतिभा प्रकाशन, पृ. 93
9. झा, पं. गोविन्द; 2007, मैथिली परिशीलन, पटना: मैथिली आकादमी, पृ. 38
10. झा, डा. विजयेन्द्र; मैथिली साहित्यक इतिहास (आदिकाल आ' मध्यकाल), मुजफ्फरपुर: प्रतिभा प्रकाशन, पृ. 94
11. झा, डा. विजयेन्द्र; 2022, मैथिली भाषाविज्ञान, मुजफ्फरपुर: प्रतिभा प्रकाशन, पृ. 421-22
12. झा, पं. गोविन्द; 2011, भाषाशास्त्र प्रवेशिका, पटना: दीनबन्धु प्रकाशन, पृ. 90-91

13. झा, डा. विजयेन्द्र; 2022, मैथिली भाषाविज्ञान, मुजफ्फरपुर: प्रतीभा प्रकाशन, पृ. 276
14. उद्धत: झा, पं. गोविन्द; 2011, भाषाशास्त्र प्रवेशिका, पटना: दीनबन्धु प्रकाशन, पृ. 90-91
15. ओएह, पृ. 90-91
16. राजशेखर, कर्पूरमंचरी, श्लोक संख्या-20